रजत जयन्ती ग्रन्थमाला-१५

वैदिक आख्यान

प्रभाकर नारायण कवठेकर

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

भूमिका

विश्व में कई कारणों से वेदों को मानव की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति माना जाता है। भारत के लिये यह गौरव की बात हो सकती है और वह है ही, किन्तु न केवल भारत के ही लिये अपितु समूचे विश्व में वेद मानव मात्र के लिये आदरणीय हैं। वेदों से धर्म की संस्थापना हुई (वेदो ऽ खिलो धर्ममूलम्), किन्तु मूलतः विश्व का कल्याण, समूचे मानव जाति के उन्नयन, शुभ संस्कारों के प्रवर्तन, ज्ञान की विभिन्न विधाओं के निर्देशन तथा भक्ति और कर्म के त्यागमय समर्पण के कारण वेद मानव-धर्म की प्रतिष्ठा करते हैं।

यह अवश्य है कि, वेदों के अनेक भाष्य विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं, वे सभी अभ्यसनीय हैं। इन में प्राचीन शास्त्रीय परिपाटी के भाष्य एक ओर हैं तो दूसरी ओर नई उद्‌भावना और प्रेरणा लेकर आधुनिक काल के विद्वानों के द्वारा किये हुए भाष्य विद्यमान हैं। प्रथम पक्ष के अन्तर्गत यास्क, सायणाचार्य, इस समय के स्वामी श्री करपात्री जी आदि की विवेचना, खण्डन-मण्डनात्मक शैली में प्रस्तुत प्राचीन शास्त्रीय सिद्धान्त-साधना है। आधुनिक काल में दो प्रकार के विद्वानों ने अपने भाष्य और अनुवाद हमारे सम्मुख रखे हैं। एक प्रकार में महर्षि दयानन्द, महर्षि अरविन्द, पं. मधुसूदन ओझा आदि महानुभावों की वेद-व्याख्याएं हैं तो दूसरे प्रकार में पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों का अध्ययन कर जो अनुवाद और व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं वे सब हैं।

इतना अवश्य है कि, पाश्चात्य और नये विद्वानों ने वेदों के ऐतिहासिक काल के परिप्रेक्ष्य में विवेचन करना प्रारम्भ किया, तब से वेदों के आविर्भाव काल, उन के रचयिताओं या उद्‌गायकों की जानकारी, वेदों में व्यक्त तत्कालीन समाज-व्यवस्था, मान्यताएं और अवधारणाएं चर्चा का विषय बनी हैं। आज विश्व में विदेशी विद्वान् प्राचीन परम्परा से प्राप्त शास्त्रीय मान्यता को देख कर भी आधुनिक दृष्टि से वेदों का अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रकार वेदों का अध्ययन व्यापक धरातल पर चल रहा है। यह एक स्वागतयोग्य स्थिति है।

वेदों का आख्यान-विषयक अध्ययन प्राचीन सन्दर्भों के साथ हम यहां प्रस्तुत करना चाहते हैं। प्रारम्भ में वैदिक आख्यानों का अध्ययन इस प्रथम खण्ड में अपेक्षित है। वैदिक आख्यानों के लिए वैदिक दैवतकथा-शास्त्र (Mythology) को

विषयानुक्रमणिका

भूमिका	i
वैदिक आख्यान का स्वरूप	१
दैवतकथा	२३
आख्यानों का उद्भव और विकास	२८
ऋग्वेद में दैवतकथा	४४
ऋग्वेद के देवता : इन्द्र	६३
ऋग्वेद में सूर्यग्रहण	७९
सन्दर्भ-सूची	८५

कारण, अपितु देवों की अन्य कुतिया का नाम ऋग्वेद से ज्ञात होता है, वह है सारमेयौ अर्थात् सरमा नाम की देवों की कुतिया के दो पुत्र -सारमेयौ, जो देव यम के सहचर प्राणी थे ।[१] इसलिए उस सरमा को ही इन्द्रदूती मान लेने का प्रमाद हो गया । एक अच्छा चरित्र प्राणिकथा के चमत्कारी पात्र के रूप में बदल गया । एक दिव्य और उदात्त मानवीय गुणों की सरमा नामक महिला राजदूती जो एक ऐतिहासिक चरित्र रहा है भुलाई गई । इतिहास पराजित होता है । कहानी की भी हानि होती है, जब उच्च कोटि के चरित्र को निम्न श्रेणी के चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है ।

कथा का कथन (Narration) एक कला है । वेद-विद्या को इस कला का सहयोग मिला । कथा-कथन में कथ्य का जो महत्त्व है वह अपने स्थान पर है । किन्तु सफल कहानीकार को भी शैली का सहयोग लेना ही पड़ता है । मन मोहक चौखट को बनाए रखने के लिए सुन्दर चित्र की किनारों को काटकर सौन्दर्य को दरकिनार करने वाले चित्रकार को रसिक कभी माफ नहीं करते । घटना और तदंगभूत चरित्र की हानि न केवल इतिहास की अपितु कहानी की भी हानि होती है । सरमा का पवित्राख्यान इसका एक उदाहरण है ।

ऐसा भी नहीं है कि, कहानी की हानि जानबूझकर की गई थी । यह तो देखना ही पड़ेगा कि दो संहिताओं में कालगत कितना अन्तर आ गया था । ऋग्वेद के वैदिक देव स्वयं यज्ञ में उपस्थित होते थे । हमारी दैवत-कथा (मैथोलॉजी) के वे जीवित चरित्र थे । उनके शौर्य की कहानी वीर-गाथा के रूप में लोकप्रिय हुई ।

इन आख्यानों की जानकारी ब्राह्मणों तथा उपनिषदों को थी । ऐसी प्राचीन कथा को 'इतिहास' कहने में कोई कठिनाई नहीं थी । शतपथ ब्राह्मण में 'अन्वाख्यान्' एवं 'इतिहास' का भेद दिखाया गया है जो स्पष्ट नहीं है ।[२] जैमिनीयोपनिषद्,[३] बृहदारण्यकोपनिषद्[४] तथा छान्दोग्योपनिषद्[५] में भी 'इतिहास' शब्द प्रयुक्त है । इससे स्पष्ट है कि, 'इतिहास' को वैदिक साहित्य में मान्यता थी । गोपथ ब्राह्मण में 'पुराण' का उल्लेख है ।[६] शांखायन श्रौतसूत्र में तो 'इतिहास-वेद' का उल्लेख है । वेद ज्ञान है । मन्त्रों से जो परम्परागत आख्यान प्राप्त है वे भी वेद हैं ।

शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में 'इतिहास-पुराण' शब्दों की एकत्र अवस्थिति

---

१. ऋ.सं. १०.१४.१०, ७.५५.२.

२. श.ब्रा., १३,४,३,१३,१३; मैक्डानेल तथा कीथः वैदिक इण्डेक्स, १, पृ. ७६.

३. जै.उ.,१.४३

४. जै.उ.,१.४३

५. बृ.उ. १,४,१०,४,१,६

६. छा.उ. ७.१

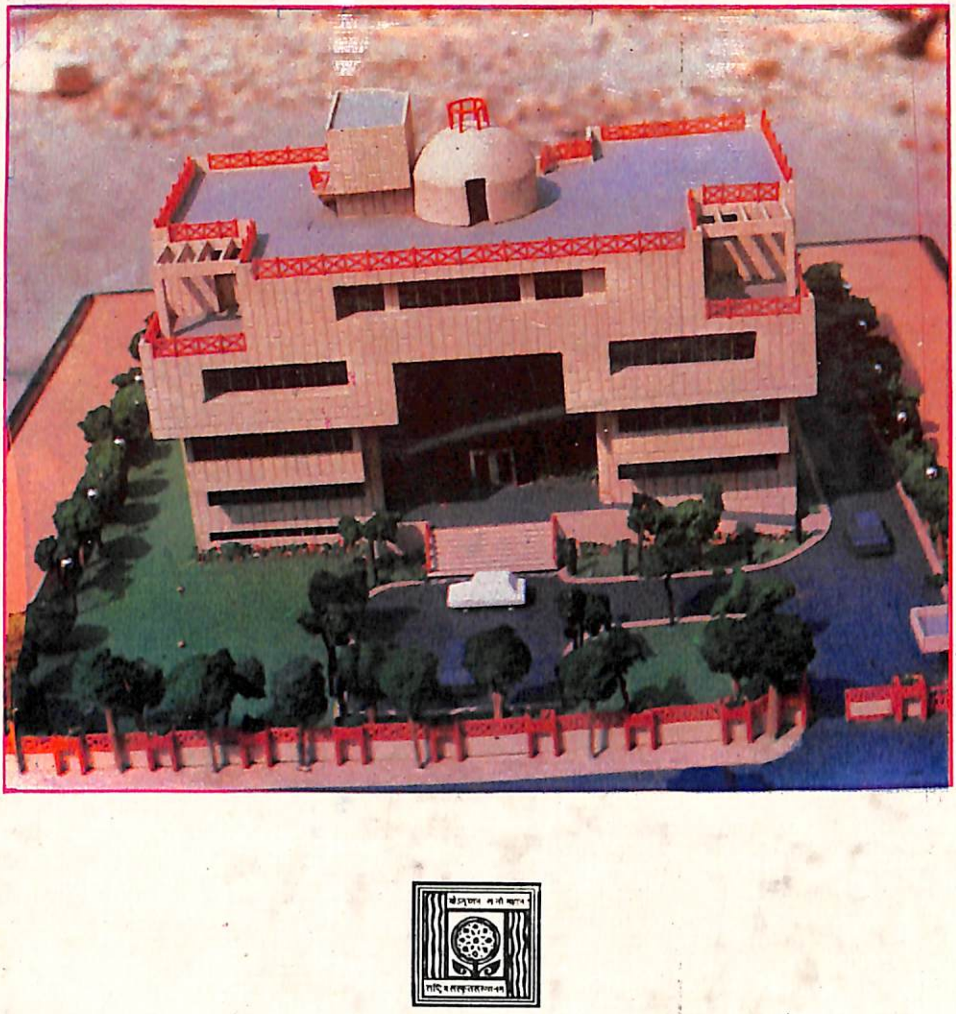

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

ए-४०, विशाल एन्कलेव, राजा गार्डन,
नई दिल्ली-११००२७ (भारत)